IJISEM
INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIONS IN SCIENCE ENGINEERING AND MANAGEMENT

International Journal of Innovations In Science Engineering And Management

कृषक जीवन के विविध आयाम
(प्रेमचंद के उपन्यास साहित्य के विशेष संदर्भ में)

डॉ. सुधीर कुमार गौतम[1], अदिति ठाकुर[2]

[1]सहायक आचार्य, एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह (म.प्र.)
[2]शोध छात्रा, हिन्दी विभाग

OPEN ACCESS

Volume: 3

Issue: 2

Month: May

Year: 2024

ISSN: 2583-7117

Published: 13.05.2024

Citation:

डॉ. सुधीर कुमार गौतम, अदिति ठाकुर "सागर जिले में प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर कार्यरत् महिला शिक्षिकाओं में अपने व्यवसाय के प्रति कार्य संतोष का अध्ययन" International Journal of Innovations In Science Engineering And Management, vol. 3, no. 1, 2024, pp. 01–06.

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Share Alike 4.0 International License

भूमिका :-

वारेन हेस्टिंग्ज का यह मत था कि समस्त भूमि सरकार की है और जमींदार केवल बिचौलिए मात्र हैं। हेस्टिंग ने उन जमींदारों के अस्तित्व को स्वीकार किया. जिसमें इन जमींदारों से मिलने वाली बोली के बराबर भू-राजस्व कम्पनी को देने की सामर्थ्य थी। 1772 में पंचवर्षीय बंदोवस्त हुआ। इस बंदोवस्त का आशय जमींदारी पर मालगुजारी पाँच वर्ष के लिए निश्चित हुई। इसके साथ ही मालगुजारी की वसूली उस व्यक्ति को हो जो सबसे अधिक दे सके। इसके परिणाम के संबंध में डॉ. ताराचंद के अनुसार "इसका फल यह हुआ, किसानों द्वारा रैयतों का पूर्ण निष्कासन और दमन. कर्तव्यच्युत जमींदार फरार होते किसान और काम से भागते हुए रैयत। यह भारत के ग्रामीण संगठन में पहली दरार थी।[1] जब इसके परिणाम विरुद्ध हुए तो हेस्टिंग्ज ने बंदोवस्त का स्वरूप बदलकर उसे एक वर्षीय कर दिया। लेकिन राजस्व की दरें तो ऊंची ही रहीं. जिससे रैयत पर अत्याचार पूर्ववत् रहे। "अंत में 1793 में कार्नवालिस ने स्थायी बंदोवस्त की घोषणा की। जमींदारों को भूमि का स्वामी मानकर उसे भूमि के समस्त अधिकार प्रदान किये गये। जमींदार को पूरे लगान का 10/11 भाग सरकार को देना पड़ता था और नियत तिथि पर राजस्व न देने पर उसकी भूमि नीलाम की जा सकती थी।"[2] इस व्यवस्था में राजस्व ज्यादा बढ़ने से जमीदार और काश्तकार तो बहुत दुखी थे लेकिन सरकार खुश थी।

[1] आधुनिक भारत का इतिहास : रामलखन शुक्ल, हिन्दी माध्यम, दिल्ली, 1960, पृ. 44
[2] वही, पृ. 44

यदि लगान की वसूली न हुई तो उस कृषक की भूमि नीलाम हो जाती थी। इस प्रकार बंगाल की भूमि व्यवस्था का परिणाम सामंतवाद तथा कृषि दासता थी। बंदोवस्त में कई तब्दीलियां हुई। सरकार को इससे लाभ हुआ तथा उसकी आय का निर्धारण हो गया। सर रिचर्ड टेंपुल ने अपनी पुस्तक मैन एण्ड इवेंट्स ऑफ माई टाइम इन इण्डिया (मेरे समय का भारत व्यक्ति और घटनाएं) में लिखा कि "लार्ड कार्नवालिस का स्वामी बन्दोबस्त एक ऐसा उपाय था जो बंगाल की जनता के बीच इंग्लैण्ड की जमीदारी से संबंधित संस्थाओं को स्वाभाविक बनाने में कारगर साबित हुआ।"

लार्ड ब्रौम ने बन्दोवस्त के विषय में कहा इसके तहत् रैयत से 20 शिलिंग से 18 शिलिंग लगान के रूप में लिए जाते थे। इस जमींदारी प्रथा में लगान वसूली का काम अलग-अलग श्रेणी के दलालों को सुपुर्द था. जिससे रैयत का शोषण और बढ़ गया। किसान की दशा दयनीय होती गई। कृषक वर्ग की इस दुर्दशा के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण लेने की प्रथा का जन्म हुआ। उन्हें लगान की अदायगी के लिए नियमित रूप से ऋण लेना पड़ता था। इस तरह अंग्रेजी शासन में कृषकों का शोषण दो तरह से होने लगा। एक ओर लगान तो दूसरी ओर साहूकारों से ऋण तथा उसका व्याज। इसका परिणाम यह हुआ कि कृषि की अवनति होती गई। जमीनें साहूकारों को गिरवी रखी जाने लगीं। ऋण न चुकाने की स्थिति में महाजन उनकी जमीन ले लेते थे। ऐसे किसान, मजदूर बनकर रह जाते थे। इस तरह से किसान जीवन के अनेक आयाम बनते गये।

प्रेमचंद का कथा-साहित्य मानव जीवन का अमर दस्तावेज है। प्रेमचंद अपने युग के ही नहीं वरन् साहित्य के समर्थ और सशक्त कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उन्होंने अपने कथा साहित्य में मानव को समय रूप से प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है।[3] ये मानव एक ही जाति या वर्ग के नहीं हैं. पूरे भारत के प्रेमचंद कालीन समाज के प्रतिनिधि हैं।[4] किसान की झोपड़ी से लेकर राजा के महलों तक मिलने वाले अनेक जीवन्त चरित्र, इनके उपन्यासों में मिलते हैं। उनके कथा साहित्य में मजदूरों और किसानों का पसीना बहाते हुए मिलों और खेतों पर काम करना साहूकार या जमींदार से उधार रुपये लेकर अपनी झूठी शान को उजाकर करने के लिए विवाह. मृतक भोज और बिरादरी को दावतें देना आदि का यथार्थ चित्रण प्रेमंचद ने किया है। ग्राम्य जीवन को जो आत्मीय और प्राणमयी झांकियां उन्होंने उपस्थित की है. वे हिन्दी उपन्यास में अन्यत्र दुर्लभ हैं।

लिखा कि 'लार्ड कार्नवालिस का स्वामी बन्दोबस्त एक ऐसा उपाय था जो बंगाल की जनता के बीच इंग्लैण्ड की जमीदारी से संबंधित संस्थाओं को स्वाभाविक बनाने में कारगर साबित हुआ।"

लार्ड ब्रौम ने बन्दोवस्त के विषय में कहा इसके तहत् रैयत से 20 शिलिंग से 18 शिलिंग लगान के रूप में लिए जाते थे। इस जमींदारी प्रथा में लगान वसूली का काम अलग-अलग श्रेणी के दलालों को सुपुर्द था. जिससे रैयत का शोषण और बढ़ गया। किसान की दशा दयनीय होती गई। कृषक वर्ग की इस दुर्दशा के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण लेने की प्रथा का जन्म हुआ। उन्हें लगान

[3] प्रेमचंद कथा साहित्य समीक्षा और मूल्यांकन : डॉ. धर्मध्वज त्रिपाठी, प्रेम प्रकाशन मंदिर, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1993, पृ. 164

[4] प्रेमचंद और उनका युग बलभद्र तिवारी, प्रेमचंद साहित्य संदर्भ, पृ. 143

की अदायगी के लिए नियमित रूप से ऋण लेना पड़ता था। इस तरह अंग्रेजी शासन में कृषकों का शोषण दो तरह से होने लगा। एक ओर लगान तो दूसरी ओर साहूकारों से ऋण तथा उसका व्याज । इसका परिणाम यह हुआ कि कृषि की अवनति होती गई। जमीनें साहूकारों को गिरवी रखी जाने लगीं। ऋण न चुकाने की स्थिति में महाजन उनकी जमीन ले लेते थे। ऐसे किसान, मजदूर बनकर रह जाते थे। इस तरह से किसान जीवन के अनेक आयाम बनते गये।

प्रेमचंद का कथा-साहित्य मानव जीवन का अमर दस्तावेज है। प्रेमचंद अपने युग के ही नहीं वरन् साहित्य के समर्थ और सशक्त कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उन्होंने अपने कथा साहित्य में मानव को समय रूप से प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है। ये मानव एक ही जाति या वर्ग के नहीं हैं, पूरे भारत के प्रेमचंद कालीन समाज के प्रतिनिधि हैं। किसान की झोपड़ी से लेकर राजा के महलों तक मिलने वाले अनेक जीवन्त चरित्र, इनके उपन्यासों में मिलते हैं। उनके कथा साहित्य में मजदूरों और किसानों का पसीना बहाते हुए मिलों और खेतों पर काम करना साहूकार या जमींदार से उधार रुपये लेकर अपनी झूठी शान को उजाकर करने के लिए विवाह, मृतक भोज और बिरादरी को दावतें देना आदि का यथार्थ चित्रण प्रेमंचद ने किया है। ग्राम्य जीवन को जो आत्मीय और प्राणमयी झांकियां उन्होंने उपस्थित की हैं. वे हिन्दी उपन्यास में अन्यत्र दुर्लभ हैं।[5]

प्रेमचन्द ने गोदान उपन्यास की मूल समस्या ऋण की समस्या है। इस उपन्यास में किसानों के साथ मानो वह आप बीती कह रहे हों। गोदान के वर्णन और चित्रण में एक अपूर्व आत्मीयता और तल्लीनता है। उपन्यास के अंत में तुम आ गये गोबर। मैंने मंगल के लिए गाय ली है। यह खड़ी है. देखो। क्षीण स्वर में होरी धनिया की ओर मुखातिब होकर बोला- मेरा कहा सुना माफ करना धनिया। अब जाता हूं। रो मत धनिया, अब कब तक जिलायेगी, अब मरने दे।[6]

रंगभूमि में प्रेमचंद ने सामाजिक स्थितियों के चित्रांकन में अपने शिल्पगत् कौशल का प्रयोग किया है। इसके कथानक की आंतरिक एकता का संधान, व्यक्ति स्तर पर विनय तथा सोफिया की प्रेमानुभूति और सामाजिक स्तर पर सूरदास तथा उसके आन्दोलन के कथानक में किया जा सकता है। उपन्यास में सूरदास की महत्वपूर्ण भूमिका है। वही सबका नेतृत्व करता है। आन्दोलन जब उग्र रूप ले लेता है तो सूरदास को सबकी चिन्ता है. वह जन समुदाय की ओर देखता कहता है भाईयो. आप लोग अपने-अपने घर जायें। यहां जमा होकर हाकियों को चिढ़ाने से क्या फायदा? मेरी मौत आयेगी तो आप लोग खड़े रहेंगे और मैं मर जाऊंगा। मौत न आयेगी तो तोपों के मुंह से बचकर निकल जाऊंगा। मैं धर्म के बल से लड़ना चाहता था...।[7] इस तरह से सूरदास सबको बचाने का प्रयास करता है।

कर्मभूमि उपन्यास की कथा-वस्तु सुगठित एवं सुनिश्चित है। इसमें अवांतर कथाओं की योजना भी की गई है। किन्तु मुख्य कथा में किसी प्रकार की बाधा नहीं पहुंचती। इसमें कथा-वस्तु चाहे मुन्नी से संबंधित हो या अमर, सकीना, महन्त जी. सलीम, लाला

5 प्रेमचन्द, साहित्यिक विवेचना, नंददुलारे वाजपेयी, पृ. 108–109

6 गोदान, प्रेमचंद, पृ. 537

7 रंगभूमि, मुंशी प्रेमचंद, साहनी पब्लिकेशन, दिल्ली, 1965, पृ. 461

समरकान्त, आत्मानन्द, सुखदा आदि से। इन सबकी परस्पर कथा-सूत्रता और कथा-शिल्प का पुष्ट प्रयोग इस उपन्यास को असफल नहीं होने देता।[8] कर्मभूमि का एक अश मुझे तो उस आदमी की सूरत नहीं भूलती. जो छः महीने से बीमार पड़ा था और एक पैसे की दवा न की थी। इस दशा में भी जमींदार ने लगान की डिग्री करा ली और जो कुछ घर में था. नीलाम करा दिया। बैल तक बिक गये।[9] उपर्युक्त संवाद में समाज में शोषण की स्थिति का विश्लेषण है और साथ ही किसान की निर्धनता और जमींदार की **उद्दण्डता** का विवेचन भी निहित है।

प्रेमचंद का किसान होरी साधारण तथा अशिक्षित होते हुए भी शिक्षित, सभ्य तथा अभिजात वर्ग के सम्पर्क में आता है। आशय यह कि वह अपने को अभिजात वर्ग से जुड़ा हुआ महफूज करने के कारण अन्य किसानों की अपेक्षा अपने को अनुभवी समझता है। प्रेमचंद के संवादों में ओजस्विता है, जो समस्याओं और संघर्षों को पाठकों के समक्ष रखने में सफल होती हैं। संवाद ही पात्र की क्रिया-कलापों को अभिव्यक्त करते हैं।[10]

वस्तुतः प्रेमचन्द ने किसानों, मजदूरों के जीवन की उन समग्र स्थितियों एवं परिवेश को यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है. जिनमें वे जीते हैं अपनी निर्धनता, अशिक्षा, भाग्यवादी चिन्तन और अन्ध विश्वास आदि की परम्पराओं के कारण वे इस प्रकार के जीवन जीने के अभ्यस्त हो गये हैं। मनुष्य के जीवन में व्याप्त अनेक प्रकार की समस्यायें तद्धन्य संघर्षों आदि का ही चित्रांकन प्रेमचंद की कथा-वस्तु के अन्तर्गत हुआ है। प्रेमचंद का उद्देश्य मानव जीवन को एक सन्देश देना रहा है। यह सन्देश परिश्रम, कर्तव्य, सत्य, अहिंसा. न्याय और सद्भाव के पालन का।

संदर्भ :-

[1] आधुनिक भारत का इतिहास रामलखन शुक्ल, हिन्दी माध्यम, दिल्ली, 1960, पृ. 44

[2] वही. पृ. 44

[3] प्रेमचंद कथा साहित्य समीक्षा और मूल्यांकन डॉ. धर्मध्वज त्रिपाठी, प्रेम प्रकाशन मंदिर, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1993, पृ. 164

[4] प्रेमचंद और उनका युग बलभद्र तिवारी, प्रेमचंद साहित्य संदर्भ, पृ. 143

[5] प्रेमचन्द, साहित्यिक विवेचना, नंददुलारे वाजपेयी, पृ. 108-109

[6] गोदान, प्रेमचंद, पृ. 537

[7] रंगभूमि, मुंशी प्रेमचंद, साहनी पब्लिकेशन, दिल्ली, 1965, पृ. 461

[8] प्रेमचंद कथा साहित्य, पूर्वोक्त. पृ. 247

[9] कर्मभूमि. प्रेमचंद पूर्वोक्त, पृ. 355

[10] मेरठ विश्वविद्यालय, हिन्दी परिषद्, शोध पत्रिका. पृ. 177. मार्च 198

---

8 प्रेमचंद कथा साहित्य, पूर्वोक्त, पृ. 247

9 कर्मभूमि, प्रेमचंद पूर्वोक्त, पृ. 355

10 मेरठ विश्वविद्यालय, हिन्दी परिषद्, शोध पत्रिका, पृ. 177, मार्च 1981